छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन

2005 - 2006

रायपुर

छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन

2005 - 2006

संस्कृति विभाग

विभाग का नाम	संस्कृति विभाग
मंत्री	श्री बृजमोहन अग्रवाल
प्रमुख सचिव	श्री टी. राधाकृष्णन
विशेष सचिव	श्री एल.एन. सूर्यवंशी

विभागाध्यक्ष

आयुक्त संस्कृति एवं पुरातत्व	श्री प्रदीप पंत

विभाग के उद्देश्य

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं-मान्यताओं का समावेश एवं उनके पोषण-सवंर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर बल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य, समुदायों के पारस्परिक संवंधो को वनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा, इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक संवंधों को नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

राज्य की वोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा। देश एवं विश्व की दूसरी वोलियों. समुदायों के मध्य संवंधों को प्रोत्साहित किया जायेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। राज्य में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं फैली हुई विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने हेतु एक अंतरसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा. जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा।

स्मारकों का संरक्षण संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का नये रूप में प्रस्तुतिकरण. नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक- सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतरसंवंध को नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध-संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से करना विभाग का ध्येय है।

क्रियाकलाप

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिये कार्य करते रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है-

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश विदेश में उसका प्रचार-प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों/साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों/साहित्यकारों/विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।
- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संबंधित व्याख्यान, संगोष्ठियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना।
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।

विभाग की प्रमुख उपलब्धियां

1. कलाकारों की पहचान 'चिन्हारी' - राज्य के सुदूर अंचलों के लोक कलाकारों की पहचान करने, उनका सम्मान करने एवं यथासंभव उन्हें प्रस्तुति का मौका प्रदान करने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग द्वारा दुर्गम के अंचलों में लोक कलाकारों का सर्वेक्षण एवं सूचीबद्ध कर सम्मान पत्र भेंट करने की अभिनव योजना 'चिन्हारी' आरंभ की गई है। विभाग द्वारा राज्य की लोक कलाओं विशेषकर लुप्त होने की कगार पर खड़ी लोक कलाओं के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से विभिन्न लोक कलाओं की प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिसमें कि विभिन्न कलाओं के अभिलेखन का कार्य भी किया जाएगा।

2. लोकोत्सव व पारंपरिक मेलों का विकास – बस्तर दशहरा, शिवरीनारायण उत्सव, चक्रधर समारोह, रामगढ़ उत्सव, विलासा उत्सव, जाज्वल्यदेव महोत्सव, सिरपुर उत्सव, लोक मड़ई, डोंगरगढ़, भोरमदेव महोत्सव, ताला उत्सव आदि के आयोजन जिला प्रशासन व अन्य माध्यम से समन्वय कर कराए गए हैं। संस्कृति के प्रचार एवं पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से राजिम के पारंपरिक माघ-पूर्णिमा के मेले में मठाधीशों, संत- महात्माओं को आमंत्रित कर संत समागम का आयोजन कर इसे कुंभ का स्वरूप दिया जा रहा है।

3. जिलों में राज्योत्सव का आयोजन- राज्योत्सव के अवसर में संस्कृति विभाग की पहल पर राज्य के विभिन्न अंचलों में कलाकारों को प्रस्तुति हेतु मंच उपलब्ध कराने, नये कलाकारों की पहचान करने एवं अंचल की लोक कला को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से राज्य से सभी जिलों में जिला प्रशासन के माध्यम से तीन दिवसीय राज्योत्सव का आयोजन किया गया।

4. कला का प्रचार-प्रसार - कलाकारों को प्रोत्साहित करने एवं कला के प्रचार-प्रसार हेतु पूरे वर्ष विभिन्न आयोजन जैसे स्वतंत्रता दिवस समारोह, राष्ट्रीय रंग समारोह, शास्त्रीय संगीत समारोह, पावस प्रसंग, अखिल भारतीय नृत्य समारोह, राज्योत्सव, गणतंत्र दिवस समारोह आदि का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय भावना एवं युवाओं में जनभावना विकसित करने की दृष्टि से 'राष्ट्र का हुंकार' का आयोजन किया गया। इसी प्रकार सरस मेला, स्वदेशी मेला, जगार आदि आयोजनों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां कराई गई। राज्य की वैभवशाली कला के प्रचार-प्रसार एवं लोक कलाकारों को राज्य के वाहर प्रस्तुति के अवसर देने के विशेष प्रयासों के तहत उड़ीसा, झारखंड, उत्तरांचल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

5. राज्य में सांस्कृतिक केन्द्रों का विकास - रायपुर सहित राज्य के सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य प्रमुख नगरों अंविकापुर, जगदलपुर एवं विलासपुर में पुरातत्वीय संग्रहालय के विकास के साथ-साथ इनको सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है। इन केन्द्रों में आंचलिक साहित्य पुस्तकालय, क्षेत्र की लोक कला के अभिलेखन एवं उससे संवंधित म्यूजिक लाईब्रेरी, लोक शैली व लोक परंपराओं पर आधारित संग्रहालय वनाया जाएगा। साथ ही इन केन्द्रों के माध्यम से वर्ष भर सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाएगी।

6. सिरपुर उत्खनन व विकास - राष्ट्रीय स्तर के पुरातत्वीय स्थल सिरपुर के समग्र विकास के लिए टास्क फोर्स का गठन किया गया एव योजना तैयार कर विभिन्न विभागों के समन्वय से इस महत्वपूर्ण पुरातत्वीय धरोहर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु कार्य करवाये जा रहे हैं। सिरपुर में 2 टीलों का 8 स्थलों पर उत्खनन किया गया जिसमें प्रकाश में आए 1 महल, 3 शिवालय, 3 रिहायशी स्थल एवं 1 वौद्ध विहार व अवशेषों का अनुरक्षण, संरक्षण कार्य किया जा रहा है। सिरपुर से उत्खनन से प्राप्त प्रतिमाओं तथा पुरावशेषों के प्रदर्शन हेतु संग्रहालय निर्माण की कार्यवाही की जा रही है। सिरपुर को विश्व धरोहर के मानचित्र पर लाने के लिए विभाग कृत संकल्प है।

7. धरोहरों की सुरक्षा एवं संरक्षण – राज्य में फैले पुरातत्वीय धरोहर की सुरक्षा के लिए 68 चौकीदारों के अतिरिक्त पदों की स्वीकृति प्राप्त की गई है। इसके साथ ही प्रशासन, पुलिस, पंचायत तथा जन सहयोग से स्मारक व पुरावशेषों की सुरक्षा हेतु मजबूत कदम उठाए गए हैं।

भोरमदेव मंदिर, कवर्धा, देवरानी जेठानी, ताला, छेरका देउर मंदिर, अंबिकापुर, आनंदप्रभ कुटी विहार एवं स्वास्तिक विहार, सिरपुर का अनुरक्षण कार्य कराया गया। इसी प्रकार मावली देवी मंदिर, तरपोंगा, रायपुर, शिवमंदिर पलारी, दुर्ग, लक्ष्मणेश्वर मंदिर, खरौद, रतनपुर पुलिया से प्राप्त प्रतिमायें, विलासपुर तथा महेशपुर जिला सरगुजा के प्रतिमाओं का रसायनिक संरक्षण कार्य किए गए। तथा महत्वपूर्ण संरक्षित पुरातत्वीय स्मारकों के परिसर का उन्नयन एवं विकास कार्य तथा स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का कार्य प्रारंभ किया गया। राज्य के पुरातत्वीय स्मारकों जैसे- भोरमदेव, मड़वा महल, बालोद, ताला, सिरपुर, बारसूर का बत्तीसा मंदिर, डीपाडीह आदि के संरक्षण एवं विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ राज्य की वैभवशाली पुरासम्पदा के संरक्षण, प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण जिलों में पुरातत्वीय संग्रहालय स्थापित करने के लिए राजनांदगांव, जांजगीर-चांपा, महासमुन्द, कांकेर, सरगुजा, रायगढ़, कोरिया, विलासपुर कलेक्टरों सहित खैरागढ़ विश्वविद्यालय को संग्रहालय के विकास के लिए राशि आवंटित की गई है।

8. गोष्ठियां – राज्य की कला, संस्कृति, परंपरा, वैभवशाली धरोहरों, साहित्यकारों एवं महापुरूषों पर आधारित गोष्ठियों, स्मृति व्याख्यानों तथा साहित्यिक वैचारिक गोष्ठियों का आयोजन विभाग के साथ-साथ विभाग के अंतर्गत स्थापित पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ तथा सांस्कृतिक संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर आयोजित किया गया।

9. अनुदान - 200 से भी अधिक सांस्कृतिक/ साहित्यिक/ सामाजिक संस्थाओं/ व्यक्तियों को विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, पुरातत्वीय गतिविधियों एवं प्रकाशन हेतु अनुदान देकर उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वाह किया गया।

10. प्रकाशन - स्वतंत्रता दिवस, राष्ट्रीय रंग समारोह, पावस-प्रसंग, शास्त्रीय संगीत समारोह संबंधी ब्रोशर, गणतंत्र दिवस समारोह पुस्तिका, नृत्य संगम, राज्य अलंकरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य प्रेरक विभूतियां व सम्मान ग्रहिताओं संबंधी पुस्तिका, राज्योत्सव सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं राज्य दिवस सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ब्रोशर, छत्तीसगढ़ : संस्कृति एवं पुरातत्व तथा कलातीर्थ भोरमदेव, ताला के रूद्र शिव पर आधारित ब्रोशर, बिहनिया का प्रकाशन, विभागीय पुस्तिका 'उत्कीर्ण लेख' का परिवर्धित संस्करण का प्रकाशन, महाकाव्य 'राधा-विनोद' का प्रकाशन एवं सृजनात्मक लेखन शिविर के उत्कृष्ट लेखों पर आधारित पुस्तिका 'किशोर सृजन स्वर' का प्रकाशन किया गया।

11. पुस्तकालय - संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित महंत सर्वेश्वरदास पुस्तकालय को राज्य केन्द्रीय ग्रंथालय का दर्जा दिया गया है। साथ ही इसे 'ई-लाईब्रेरी' के रूप में विकसित किया जा रहा है। 11वें वित्त आयोग के अंतर्गत प्राप्त राशि से इस ग्रंथालय के विकास हेतु रू. 50.00 लाख की कारपस निधी बनाई गयी है। इस पुस्तकालय को शहीद स्मारक में स्थानांतरित करने की योजना भी तैयार की गई है।

12. पुरखौती मुक्तांगन - राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व, पर्यावरण और जीव-सृष्टि की सन्निधि में विकास की कल्पना को साकार करने पुरखौती मुक्तांगन राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के माध्यम से आकार ले रहा है। इस योजना में ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग, अभनपुर एवं वन विभाग के माध्यम से भी कार्य किए जा रहे हैं। योजना को विस्तृत रूप देने की दृष्टि से राज्य के कला मर्मज्ञों से इसके विभिन्न प्रस्ताव एवं प्लान प्राप्त किए गए हैं, जिससे कि पुरखौती मुक्तांगन को इसकी अवधारणा के अनुरूप विकसित किया जा सके।

13. 'छत्तीसगढ़ बहुआयामी संस्कृति संस्थान' - राज्य के समस्त प्रकार के सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार-प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान होगा, इसे साकार करने के उद्देश्य से आडिटोरियम, मुक्ताकाश मंच, आर्ट गैलरी आदि तैयार करने की योजना बनाई गई है। 'बहुआयामी संस्कृति संस्थान' के भवन के निर्माण हेतु रायपुर में 4.8 एकड़ भूमि पंडरी में प्राप्त की जा चुकी है एवं इस सांस्कृतिक परिसर के निर्माण हेतु देशभर के अनुभवी वास्तुविदों से समाचार पत्रों से विज्ञापन के माध्यम से प्रास्तव प्राप्त किए गए।

कला एवं संस्कृति

प्रदेश की संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है, जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबंधों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। स्थानीय समुदायों की अवाव सांस्कृतिक परम्पराओं की पहचान, मान्यता देना, पुनर्जीवित करना, दस्तावेजीकरण, प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अद्वितीय सांस्कृतिक वैविध्य एवं विशिष्ट पहचान को परिभाषित कर, उसके सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों तथा सांस्कृतिक प्रदेशों के साथ संबंध व विनिमय स्थापित किया जा रहा है। राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन-सहन, तौर तरीके, रीति-रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को बनाये रखने हेतु भी कार्य किया गया है। इस हेतु विभागीय क्रियाकलाप के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में कार्यरत स्वायत्तशासी एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। राजभाषा एवं संस्कृति के अन्तर्गत सहयोगी गतिविधियों हेतु 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ' स्थापित है।

आयोजन एवं उत्सव

राज्य, नयी संस्थाओं/ उत्सवों को प्रस्थापित करने के बजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/ संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है, ताकि राज्य की पारंपरिक संस्कृति अविच्छिन्न बनी रहे और समाज-संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इस तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/ सहयोग प्रदान किया गया -

- डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती के अवसर पर लोक सुधा एवं लोक नृत्य के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन। (अप्रैल 2005)
- माननीय प्रधानमंत्री के रायपुर प्रवास के दौरान राजभवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम में बस्तर का गेड़ी नृत्य, पारंपरिक वाद्यों पर धुन और मोहरी वादन की प्रस्तुति कराई गई। (अप्रैल 2005)

- आकार 2005 के समापन अवसर पर शिल्प गुरूओं का सम्मान एवं राजस्थानी लोक नृत्य-गीत तथा शिविर में प्रशिक्षित सदस्यों के पंडवानी गायन का आयोजन। (मई 2005)
- महामहिम राज्यपाल, श्री सुशील कुमार शिंदे के आगमन पर लोक कलाकारों की प्रस्तुति। (जुलाई 2005)
- स्वाधीनता दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक संध्या में देशभक्ति से ओतप्रोत पारंपरिक लोक नृत्य-गीत 'रंग दे बसंती चोला' एवं प्रख्यात गायक पं. राजन-साजन मिश्र, नई दिल्ली के गायन का आयोजन। (अगस्त 2005)

- वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले रागों पर आधारित द्वि-दिवसीय आयोजन 'पावस-प्रसंग' में विदुषी पूर्णिमा चौधरी, कोलकाता एवं पं. पंढरीनाथ कोल्हापुरे, मुम्बई का गायन तथा एम. श्रीराममूर्ति, रायपुर व साकेत साहू, रायपुर के वायलिन वादन का आयोजन। (अगस्त 2005)

- संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से चार दिवसीय अखिल भारतीय नृत्योत्सव 'नृत्य संगम' में देश के प्रख्यात नर्तक व नृत्यांगनाएं रमा वैद्यनाथन, दिल्ली द्वारा भरतनाट्यम, संगीता दास, भुवनेश्वर का ओडिसी नृत्य, दीप्ति ओमचेरी भल्ला द्वारा मोहनीअट्टम, मौलिक शाह तथा ईशिरा पारिख, अहमदाबाद द्वारा कत्थक, पद्मश्री रंजना गौहर, दिल्ली द्वारा ओडिसी, शरदी सैकिया, गुवाहाटी द्वारा सत्रीय नृत्य, आलेख्या पुंजला, हैदराबाद द्वारा कुचिपुड़ि, प्रीति पटेल, कोलकाता द्वारा मणिपुरी एवं मालविका मित्रा, कोलकाता द्वारा कत्थक नृत्य की प्रस्तुति दी गई। (सितम्बर 2005)

- राजभवन में महामहिम उपराष्ट्रपति के आगमन पर पंडवानी, लोक नृत्यों, गेड़ी नृत्य, बस्तर मोहरी वादन, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। (अक्टूबर 2005)
- छत्तीसगढ़ विधान सभा में महामहिम उपराष्ट्रपति के आगमन पर राज्य की पारंपरिक विधाओं पंथी नृत्य एवं भरथरी गायन का आयोजन किया गया। (अक्टूबर 2005)

- राजधानी में राज्य स्थापना की पांचवी वर्षगांठ के अवसर पर छः-दिवसीय राज्योत्सव में अलंकरण समारोह व राज्य की पारंपरिक नृत्य-गीत पंथी नृत्य, सुवा, परब, करमा नृत्य, चंदैनी गोंदा, राउत नाच के साथ-साथ आमंत्रित राज्य झारखंड की कला एवं सांस्कृतिक वैभव की झलक, घूमर नृत्य, पंजाबी गायन, विरहा गायन, उस्ताद अहमद व मोहम्मद हुसैन, ए. हरिहरन का गज़ल गायन, राष्ट्रीय भावना विकसित करने संगीतमय ध्वनि-प्रकाश नाट्य अभिव्यक्ति 'आजादी', अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुति-नवांकुर, कत्थक, हिन्दी नाटक 'देश बहिष्कृत' एवं इंडियन आईडल के छत्तीसगढ़ के कलाकार अमित साना के साथ अन्य युवा कलाकारों की सांगीतिक प्रस्तुति कराई गई। साथ ही सभी अन्य 15 जिलों में जिला प्रशासन के माध्यम से तीन दिवसीय राज्योत्सव का आयोजन कराया गया। (अक्टूबर 2005)

- अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में राज्य की सांस्कृतिक कला परंपरा को प्रदर्शित करने वाली प्रस्तुतियां मोहरी वादन, पंथी नृत्य, गौर नृत्य, करमा नृत्य, पंडवानी, लोक गीत-नृत्य एवं 'चित्रोत्पला के चित्र' ध्वनि-प्रकाश कार्यक्रम का विधान सभा परिसर में आयोजन किया गया। (14 से 17 नवम्बर 2005)
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला के रजत जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य दिवस पर लाल चौक थियेटर, नई दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम में भजन गायन, पारंपरिक गाथा चंदैनी नृत्य-गीत, छत्तीसगढ़ी नृत्य-गीत, राउत नाच एवं छत्तीसगढ़ के लुप्तप्राय वाद्यों पर पारंपरिक और देशभक्तिपूर्ण गीत के धुनों की प्रस्तुति। (नवम्बर 2005)
- रायपुर में आयोजित 'सरस मेला' में दस दिवसीय सांस्कृतिक प्रस्तुति के क्रम में पंडवानी, भरथरी, लोक नृत्य-गीत, लोकमंच, सुगम गायन का आयोजन किया गया। (नवम्बर 2005)
- मेडिकल कालेज वार्षिक उत्सव के अवसर पर मेडिकल कालेज सभागार, रायपुर में पंथी नृत्य एवं भजन गायन की प्रस्तुति दी गई। (दिसम्बर 2005)

- आई.टी.सी., संगीत रिसर्च अकादमी, कोलकाता के सहयोग से द्वि-दिवसीय शास्त्रीय संगीत समारोह में विदुषी पूर्णिमा सेन एवं उस्ताद राशिद खां का गायन, विदुषी अनुपमा भागवत का सितार वादन एवं उस्ताद अर्वीर हुसैन का सरोद वादन का आयोजन किया गया। साथ ही प्रशिक्षण कार्यशाला भी आयोजित की गई। (17 से 18 दिसम्बर 2005)

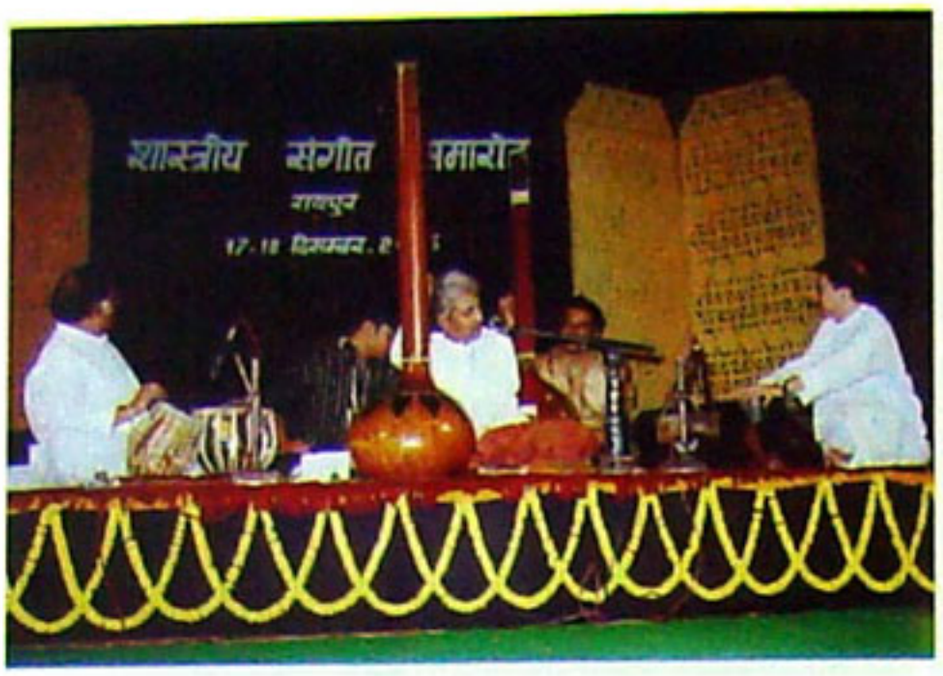

- 'स्वदेशी मेला' में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पंथी नृत्य, भजन गायन, छत्तीसगढ़ी कवि सम्मेलन, छत्तीसगढ़ी फिल्मों पर आधारित पारंपरिक एवं सांस्कृतिक प्रस्तुति, लोकमंच, पारंपरिक वाद्यों पर धुन एवं चंदैनी गोंदा की प्रस्तुति दी गई। (23 से 29 दिसम्बर 2005)

- छत्तीसगढ़ की पारंपरिक गायन, नृत्य और वादन के संवाहक देवारों के लुप्तप्राय वाद्य 'रुंझू' तथा 'ढुंगरू' के साथ लोक गाथा गायन का आयोजन। (जनवरी 2006)
- गणतंत्र दिवस के अवसर पर विभिन्न विभागों की झांकियों का समन्वय तथा राजधानी के मुख्य कार्यक्रम में लोक नर्तक दलों द्वारा गौर, राउत एवं पंथी नृत्य की प्रस्तुति तथा सांस्कृतिक संध्या में छत्तीसगढ़ी पारंपरिक नृत्य-गीत और देशभक्ति का समन्वित कार्यक्रम एवं प्रसिद्ध संगीतकार व गायक रूपकुमार एवं सोनाली राठौर, मुम्बई द्वारा देशभक्ति व सुगम संगीत पर आधारित प्रस्तुति दी गई। (जनवरी 2006)

- सांस्कृतिक कला परंपरा के प्रदर्शन, संरक्षण व प्रोत्साहन के लिए राज्य में लगने वाले पारंपरिक मेलों को प्रोत्साहित करने, राज्य की वैभवशाली लोक कला को संरक्षण एवं प्रोत्साहित करने, 'चिन्हारी' योजना के अंतर्गत दूर-दराज क्षेत्रों के कलाकारों को प्रदर्शन हेतु अधिक से अधिक मौके उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग द्वारा जिला प्रशासन के माध्यम से निम्नांकित प्रमुख उत्सव एवं महोत्सव आयोजित किए गए -

⇒ लोक मड़ई, राजनांदगांव एवं डोंगरगढ़ महोत्सव (अनुदान - रू. 3.00 लाख)

⇒ भोरमदेव महोत्सव, कवर्धा (अनुदान - रू. 2.00 लाख)

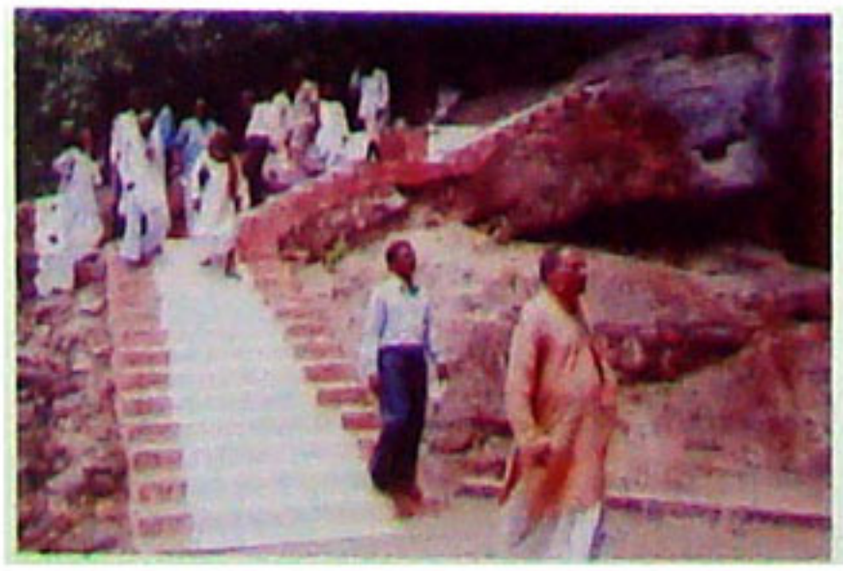

⇒ खल्लारी महोत्सव, महासमुन्द (अनुदान - रू. 0.50 लाख)

⇒ रामगढ़ महोत्सव, सरगुजा (अनुदान - रू. 2.00 लाख)

⇒ चक्रधर समारोह, रायगढ़ (अनुदान - रू. 6.50 लाख)

⇒ विलासा महोत्सव, विलासपुर (अनुदान - रू. 2.00 लाख)

⇒ कर्वार पंथी मेला दामाखेड़ा, रायपुर (अनुदान - रू. 2.00 लाख)

⇒ जाज्वल्यदेव लोक महोत्सव, जांजगीर-चांपा (अनुदान - रू. 2.00 लाख)

⇒ शिवरीनारायण महोत्सव, जांजगीर-चांपा (अनुदान - रू. 5.00 लाख)

विभाग द्वारा सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने एवं छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से निम्नलिखित राज्यों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई -

- राजस्थान, जयपुर में आयोजित 'लोकरंग' में राज्य की पहचान 'पंडवानी' एवं 'पंथी नृत्य' के दलों की प्रस्तुति दी गई। (अक्टूबर 2005)
- कुल्लू दशहरा में राज्य की पारंपरिक लोक-नृत्य व गीतों पर आधारित कार्यक्रम की प्रस्तुति। (अक्टूबर 2005)
- जमशेदपुर में आयोजित लोक उत्सव में छत्तीसगढ़ी नृत्य-गीत एवं लोकमंच की प्रस्तुति दी गई । (जनवरी 2006)
- भवानीपटना, उड़ीसा में आयोजित कालाहांडी उत्सव में गेड़ी नृत्य एवं अन्य पारंपरिक नृत्य-गीत की प्रस्तुति दी गई। (जनवरी 2006)

- ग्वालियर में आयोजित व्यापार मेला में राज्य की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रम पंथी, पंडवानी एवं लोकमंच का आयोजन किया गया। (जनवरी 2006)

- विशेष -

- 31 अगस्त को संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के अभिनय पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ रंगकर्मी श्री रामचरण निर्मलकर का माननीय संस्कृति मंत्री जी द्वारा शाल, श्रीफल द्वारा सम्मान।
- प्रख्यात पंथी शिल्पी श्री देवदास बंजारे के असमय अवसान पर स्मृति गोष्ठी का आयोजन।
- **दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की सदस्यता-** संस्कृति विभाग द्वारा पड़ोसी राज्यों से सांस्कृतिक संबंध विकसित करने एवं राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस वर्ष दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर की सदस्यता ग्रहण की है। राज्य शासन ने इसके लिए रू. 1.00 करोड़ की सदस्यता राशि केन्द्र को प्रदान की है। दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सदस्यता लेने के उपरांत विभिन्न आयोजनों के माध्यम से राज्य की संस्कृति, पड़ोसी राज्यों के सांस्कृतिक गतिविधियों के आदान-प्रदान को गति मिली है। चक्रधर समारोह, रायगढ़, दशहरा उत्सव, जगदलपुर, राज्योत्सव रायपुर, कवर्धा एवं महासमुन्द में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन तथा लोक गाथा 'भरथरी' पर मोनोग्राफ का प्रकाशन किया गया। राज्य के कलाकारों को राज्य के बाहर प्रस्तुति हेतु केन्द्र के माध्यम से भेजे गए।

- **कलाकारों की पहचान 'चिन्हारी'** - राज्य के सुदूर अंचलों के लोक कलाकारों की पहचान करने, उनका सम्मान करने एवं यथासंभव उन्हें प्रस्तुति का मौका प्रदान करने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग द्वारा दूरदराज के अंचलों में लोक कलाकारों का सर्वेक्षण एवं सूचीबद्ध कर सम्मान पत्र भेंट करने की अभिनव योजना 'चिन्हारी' आरंभ की गई है। विभाग द्वारा राज्य की लोक कलाओं विशेषकर लुप्त होने की कगार पर खड़ी लोक कलाओं के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से विभिन्न लोक कलाओं की प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिसमें कि विभिन्न कलाओं के अभिलेखन का कार्य भी किया जा रहा है ।

साहित्य

राज्य की कला, संस्कृति, परंपरा, वैभवशाली धरोहरों, साहित्यकारों एवं महापुरूषों पर आधारित गोष्ठियों के क्रम में -

- छत्तीसगढ़ के लोक-गीतकार बद्रीविशाल परमानंद यदु पर केन्द्रित संगोष्ठी एवं लोक-गीत का प्रस्तुतिकरण। (18 जुलाई 2005)
- हरिठाकुर पर केन्द्रित गोष्ठी एवं हरि ठाकुर द्वारा लिखित नाटक 'शहीद वीरनारायण सिंह' का अंश एवं लिखित छत्तीसगढ़ी व हिन्दी गीतों की प्रस्तुति। (22 अगस्त 2005)
- विभाग के अंतर्गत स्थापित पदुमलाल पुन्नालाल वख्शी सृजनपीठ द्वारा आंचलिक साहित्यकारों और जनभाषा, कला एवं संस्कृति पर आधारित आयोजनों में -
- वख्शी जयंती पर जशपुर, कोरबा, भिलाई, जगदलपुर में साहित्य सम्मेलन का आयोजन।
- रायपुर में राष्ट्रीय स्तर के द्वि-दिवसीय साहित्यकार-पत्रकार सम्मेलन का आयोजन।
- 6 जून 05 को वरिष्ठ व्यंग्यकार एवं साहित्यकार लतीफ घोंघी स्मृति आयोजन।
- 12 अगस्त 05 को तुलसी जयंती का आयोजन।
- 28 अगस्त 05 को देवदास बंजारे स्मृति दिवस का आयोजन।
- 1 सितम्बर को साहित्य, समाज और संस्कृति पर राष्ट्रीय प्रचार गोष्ठी का आयोजन एवं पुस्तकालय और वाचनालय का शुभारंभ ।

- शरद पूर्णिमा पर दुर्ग में महिला कवि सम्मेलन का आयोजन ।
- स्व. श्री रामनिहाल शर्मा श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन।
- 25 अक्टूबर से लेखक पाठक मंच का शुभारंभ कर राज्य के साहित्यकारों की कृतियों पर प्रत्येक महीने गोष्ठियों के क्रम में 29 दिसम्बर 2005 को रघुवीर सहाय 'पथिक' की 'उजियारा बगरावत चल' कविता संग्रह का विमोचन एवं संगोष्ठी, 28 जनवरी 2006 को श्रीमती विद्या गुप्त की कृति पर परिचर्चा, 4 फरवरी 2006 को श्री महेशचन्द्र शर्मा की कृति 'संस्कृति के चार सोपान' का विमोचन एवं परिचर्चा का आयोजन।

- वख्शी जी की पुण्यतिथि 28 दिसम्बर पर संगोष्ठी का आयोजन।
- निराला जयंती पर आयोजन।

विभाग के अंतर्गत स्थापित सम्मान

- **पं. सुन्दरलाल शर्मा सम्मान** (साहित्य/आंचलिक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान), इस वर्ष डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा, बिलासपुर एवं श्री ववन प्रसाद मिश्र, रायपुर को प्रदान किया गया।

- **चक्रधर सम्मान** (कला/ शिल्प कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान), इस वर्ष श्री तुलसी राम देवांगन, रायपुर एवं पं. गुणवंत माधव व्यास, रायपुर को प्रदान किया गया।
- **दाऊ मंदराजी सम्मान** (लोक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान), इस वर्ष पद्म भूषण श्रीमती तीजन वाई, भिलाई एवं श्री गोविन्द राम झारा, रायगढ़ को प्रदान किया गया।
- **छत्तीसगढ़ अप्रवासी भारतीय सम्मान** (विदेश में रहकर देश व राज्य का प्रोत्साहन करने हेतु अंतरराष्ट्रीय सम्मान), इस वर्ष श्री चन्द्रकांत पटेल, यू.एस.ए. को प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों के सम्मान समारोह का समन्वय एवं अलंकरण समारोह संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किया गया।

अनुदान एवं सहायता

अस्तित्वमान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली संस्थाओं को बढ़ावा, शारीरिक तथा मानसिक चुनौतियों से जूझते लोगों को प्रोत्साहन तथा सुरक्षित जीवन-यापन के लिए अर्थाभावग्रस्त संस्कृति कर्मियों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए विभागीय पहल कर पूर्व प्रकरणों में कार्यवाही तथा नए प्रकरण तैयार कर सहायता के लिए निम्नानुसार कार्य किए गए -

- वर्ष के दौरान 29 अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/ कलाकारों को जिला पंचायतों के माध्यम से रू. 700/- प्रतिमाह की दर से मासिक सहायता (पेंशन) स्वीकृत किया गया है।
- विभाग द्वारा कलाकार कल्याण कोष से भी 17 विभिन्न जरूरतमंद कलाकारों/ साहित्यकारों को रू. 5,000 के मान से वर्ष 2005-06 के दौरान राशि स्वीकृत की गई है।
- राज्य की संस्कृति, कला से जुड़ी 69 विभिन्न संस्थाओं/ व्यक्तियों को विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों, कला के विकास हेतु अनुदान दिया गया।
- कलावीथिका के विकास से संबंधित 3 संस्थाओं/ व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।
- साहित्यिक गोष्ठियों व साहित्य एवं अन्य सामाजिक कार्यों से जुड़े अन्य आयोजनों हेतु 9 संस्थाओं/ व्यक्तियों को तथा साहित्य एवं कला से जुड़े प्रकाशनों हेतु 10 संस्था/ व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।
- सांस्कृतिक/ साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए अहीर नृत्य कला महोत्सव, बिलासपुर मानस महोत्सव, जांजगीर-चांपा , नाटक मंचन, दुर्ग (रू. 10,000/-), पारंपरिक लोक नृत्य आयोजन, सोनहत, कोरिया पंडवानी सम्मेलन, रिंगनी, दुर्ग, समकालीन चित्रकला की कोलकाता में प्रदर्शनी, सदगुरू कबीर सद्भावना यात्रा हेतु, वि. कृ. जोशी, भातखण्डे एवं पलुस्कार स्मृति संगीत आयोजन, रायगढ़ में व्याख्यान माला व काव्यपाठ का आयोजन, साहित्यिक रचना शिविर, बिलासपुर, श्री कृष्ण संगीत, धमतरी में संगीत शिविर (रू. 50,000/-), को अनुदान प्रदान किया गया। साथ ही साहित्यिक गतिविधियों के क्रम में शोधपरक ग्रंथ 'पांडव गाथा महाभारत एवं पंडवानी' का प्रकाशन (रू. 25,000/-), 'तपत कुरू भई तपत कुरू' साहित्यिक पुस्तक का प्रकाशन (रू. 15,000/-), 'बस्तर का लोक शिल्प' पुस्तक का प्रकाशन (रू. 20,000/-), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ द्वारा बख्शी जी से संबंधित साहित्य का क्रय (रू. 1,00,000/-), 'देश हमारा भारत' पुस्तक का प्रकाशन (रू. 15,000/-), 'राजतिलक' पुस्तक का प्रकाशन (रू. 15,000/-), छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेल पुस्तक का प्रकाशन (रू. 20,000/-) के लिए पोषण अनुदान प्रदान कर उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वाह किया गया।

अभिलेखन

स्थानीय समुदायों की अबाध सांस्कृतिक परंपराओं की पहचान, दस्तावेजीकरण तथा गैर-अभिलेखीय परंपराओं को प्रोत्साहित करने हेतु निम्नानुसार प्रलेखन कार्य किए गए -

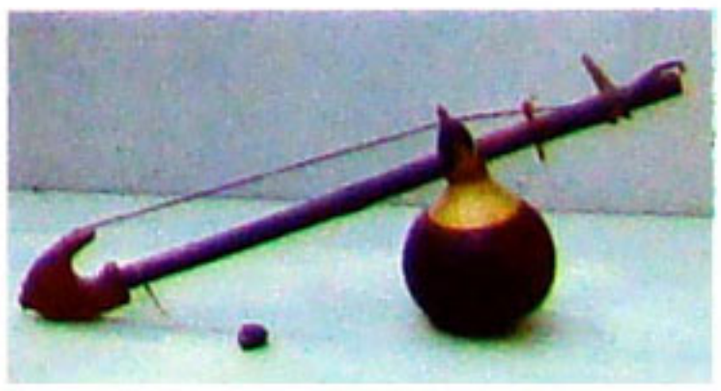

- छत्तीसगढ़ की पारंपरिक गायन, नृत्य और वादन के संवाहक देवारों के लुप्तप्राय वाद्य 'रुंझू' तथा 'दुंगरू' का अभिलेखन।

प्रकाशन

सांस्कृतिक परंपराओं की प्रस्तुति एवं उनका प्रचा ार, सांस्कृतिक गतिविधियों की निरंतरता तथा जीवन्त प्रवाह पर विभिन्न प्रकाशन किए गए हैं -

- राज्य अलंकरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य प्रेरक विभूतियां व सम्मान ग्रहिताओं संवंधी पुस्तिका एवं पारंपरिक वाद्यों पर आधारित ब्रोशर का प्रकाशन।
- राज्योत्सव 2005 के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं राज्य दिवस, नई दिल्ली के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ब्रोशर का प्रकाशन।

- स्वतंत्रता दिवस 2005, पावस-प्रसंग 2005, शास्त्रीय संगीत समारोह 2005 संवंधी ब्रोशर का प्रकाशन।
- अखिल भारतीय नृत्योत्सव 'नृत्य संगम' ब्रोशर का प्रकाशन।
- ताला के रूद्र शिव, छत्तीसगढ़ : संस्कृति एवं पुरातत्व तथा कलातीर्थ भोरमदेव पर आधारित ब्रोशर का प्रकाशन।
- विहनिया के चतुर्थ अंक का प्रकाशन।
- सृजनात्मक लेखन शिविर में प्राप्त आलेखों पर आधारित 'किशोर सृजन स्वर' पुस्तिका का प्रकाशन।
- महंत घासीदास संग्रहालय का अंग्रेजी एवं हिन्दी में ब्रोशर का प्रकाशन।

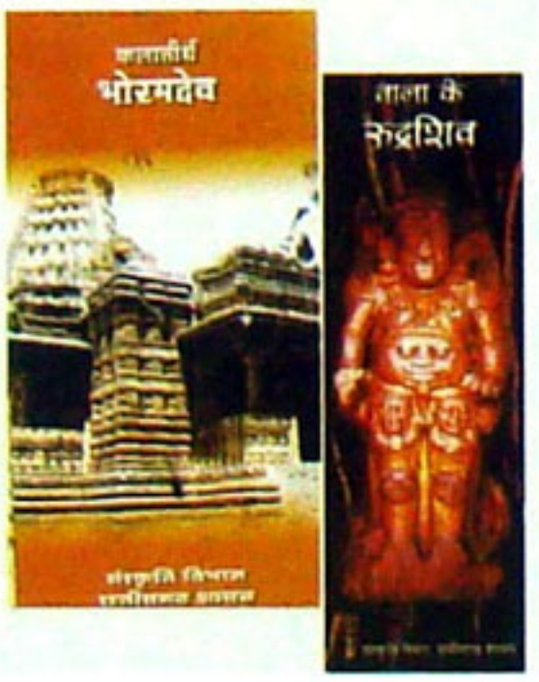

- हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपि 'राधा-विनोद', विभागीय पुस्तिका 'उत्कीर्ण लेख' का प्रकाशन।

- गणतंत्र दिवस समारोह 2006 पुस्तिका का प्रकाशन।
- गणतंत्र दिवस सांस्कृतिक संध्या, छत्तीसगढ़ की कलात्मक परंपरा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक आभूषण 'अंगराग' पर आधारित ब्रोशर का प्रकाशन।
- मंदिरों की नगरी 'डीपाडीह' पर आधारित ब्रोशर प्रकाशनार्धान।

इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के राज्य संरक्षित 58 स्मारकों का विवरण देते हुए हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली पुस्तिका, छत्तीसगढ़ की शिल्प कला, देवार जाति पर मोनोग्राफ, छत्तीसगढ़ के शैलचित्रों पर आधारित पुस्तिका को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप दिया जा रहा है।

गोष्ठियां

अंतःसंकायी संवाद तथा स्थानीय समुदायों के सहनिर्देशित पहल से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करने के उद्देश्य से निम्नानुसार आयोजन किए गए -

- बुद्ध जयंती के अवसर पर 'छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म और कला' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन। (23 मई 2005)
- गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर गुरू घासीदास जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन। (दिसम्बर 2005)

- साप्ताहिक गोष्ठी के क्रम में पुरस्कृत फिल्म 'समर' का प्रदर्शन एवं पटकथा लेखक श्री अशोक मिश्र से संवाद का आयोजन। (4 दिसम्बर 2005)
- प्रसिद्ध अभिनेता रघुवीर यादव, पटकथा लेखक अशोक मिश्र, मुम्बई, रंगकर्मी राजकमल नायक, रायपुर द्वारा 'सांस्कृतिक संरचना' और 'दृश्य माध्यम' विषय पर चर्चा का आयोजन। (6 जनवरी 2006)

प्रदर्शनी

सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है -

- महावीर जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ में जैन कला एवं परंपरा से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन जिन कुशलसुरि दादावाड़ी, रायपुर में किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ की महत्वपूर्ण जैन प्रतिमाओं व स्मारकों के साथ-साथ देश की महत्वपूर्ण जैन प्रतिमाओं एवं पुरातत्वीय महत्व के स्थलों के छायाचित्र प्रदर्शित किए गए। (अप्रैल 2005)
- बुद्ध जयंती के अवसर पर 'छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म और कला' विषय पर छायाचित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन। (मई 2005)
- स्वाधीनता दिवस 2005 के अवसर पर 'अंचल के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों' पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।

- शास्त्रीय संगीत समारोह में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वरिष्ठ संगीतज्ञों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी।
- गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर गुरू घासीदास जी से संबंधित स्थल एवं रावटियों पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन। (18 दिसम्बर 2005)

- छत्तीसगढ़ की कलात्मक परंपरा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक आभूषण 'अंगराग' पर प्रदर्शनी का आयोजन। (जनवरी 2006)

- श्री राजीवलोचन कुंभ 2006 के अवसर पर पंचक्रोशी यात्रा एवं शिल्पकारों की नजर में राजिम पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।

लोक शिल्पियों की कार्यशाला

- 'आकार 2005' प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत कोण्डागांव एवं पश्चिम बंगाल का मृदा शिल्प, बस्तर का ढोकरा शिल्प, बिहार की मधुबनी चित्रकला, राजस्थान की फड़ चित्रकला, मध्यप्रदेश की जरदोजी कला, नारायणपुर, उड़ीसा का पट्ट चित्रकला, बस्तर का काष्ठ शिल्प, सरगुजा के भित्ति चित्रकला के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिल्प गुरूओं द्वारा 400 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया।

- छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोक-गाथा पंडवानी गायन के प्रति नये पीढ़ी को आकर्षित करने व इस विधा को आत्मसाध करने के उद्देश्य से पदमभूषण श्रीमती तीजनबाई द्वारा पंडवानी प्रशिक्षण दिया गया तथा नाट्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया।

मुक्ताकाश थियेटर

लोक-प्रस्तुतियों की आवश्यकता पूर्ति के लिए महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में राज्य की समृद्ध, सांस्कृतिक परम्परा और रंग-संसार की इन्द्रधनुषी छटा को सतत् आकारित करने हेतु मुक्ताकाश थियेटर का निर्माण कराया गया है। आधुनिक रंग-सुविधाओं से पूर्ण लगभग 1500 दर्शक क्षमता वाले इस थियेटर में नियमित रूप से सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया जावेगा।

पुरातत्व

पुरातत्वीय स्थलों का संरक्षण एवं विकास - विभाग द्वारा राज्य में फैली पुरासम्पदा के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में पहल करते हुए महत्वपूर्ण संरक्षित पुरातत्वीय स्मारकों के परिसर का उन्नयन एवं विकास कार्य तथा स्मारकों को पर्यटन के अनुरूप विकसित करने का कार्य प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत अनुरक्षण कार्य, मेला-उत्सव-प्रदर्शनी, फोटोग्राफी तथा माडलिंग के तहत प्रतिकृतियों का निर्माण एवं प्रकाशन कार्य करवाया गया। पुरातत्व से संबंधित संगोष्ठियां, मेला-उत्सव प्रदर्शनी एवं राज्य भर में फैले 58 संरक्षित स्मारकों का अनुरक्षण एवं रसायनिक संरक्षण कार्य किए जाते हैं।

- **अनुरक्षण कार्य** - इस वित्तीय वर्ष में भोरमदेव मंदिर, कवर्धा, देवरानी जेठानी, ताला, छेरका देउर मंदिर, अंविकापुर, आनंदप्रभ कुटी विहार एवं स्वास्तिक विहार, सिरपुर का अनुरक्षण कार्य कराया गया।

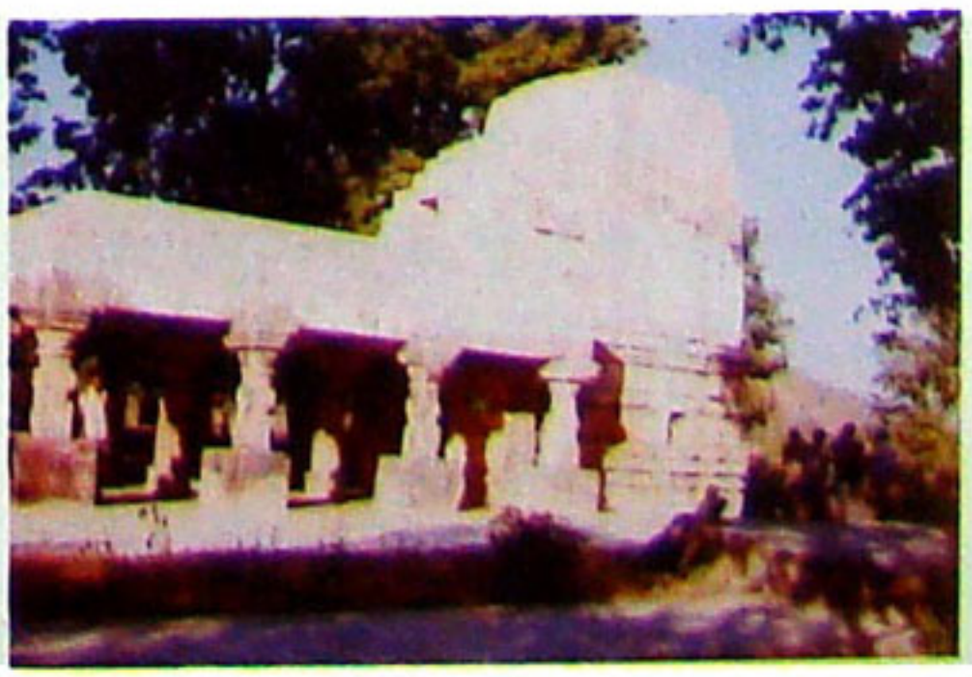

- **रसायनिक संरक्षण** - मावली देवी मंदिर, तरपोंगा, रायपुर, शिवमंदिर पलारी, दुर्ग, लक्ष्मणेश्वर मंदिर, खरौद, रतनपुर पुलिया से प्राप्त प्रतिमायें, बिलासपुर तथा महेशपुर जिला सरगुजा के प्रतिमाओं का रसायनिक संरक्षण कार्य किए गए।

- **सर्वेक्षण** - जिला कवर्धा के पंडरिया तहसील, जिला बिलासपुर के मुंगेली तहसील व लोरमी विकासखंड, रायगढ़ जिले की सारंगढ़ तहसील स्थित शैलाश्रय एवं म अपरवेली में चारामा तहसील से लेकर राजिम तक नदी तटों का विस्तृत पुरातत्वीय सर्वेक्षण एवं जिला मध्य बस्तर के भानपुरी तहसील के ग्रामों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण। (प्रस्तावित)

राज्य के पुरातत्वीय स्मारकों जैसे- भोरमदेव, मड़वा महल, बालोद, ताला, सिरपुर, बारसूर का बत्तीसा मंदिर, डीपाडीह आदि के संरक्षण एवं विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि इन स्थलों को दर्शनीय पर्यटन स्थल के अनुरूप विकसित किया जा सके। इसके अतिरिक्त राज्य की बिखरी पड़ी पुरातत्वीय धरोहर के सर्वेक्षण हेतु भी लगातार प्रयासरत हैं।

- **प्राचीन नगरी सिरपुर उत्खनन** - राष्ट्रीय स्तर के पुरातत्वीय स्थल सिरपुर के समग्र विकास के लिए टास्क फोर्स का गठन किया गया एवं योजना तैयार कर विभिन्न विभागों के समन्वय से इस महत्वपूर्ण पुरातत्वीय धरोहर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु कार्य करवाये जा रहे हैं। संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा विख्यात पुरातत्वविद् डॉ. ए. के. शर्मा के माध्यम से सिरपुर में 8 स्थलों पर उत्खनन किया गया, जिसमें 1 महल, 3 भग्न शिव मंदिर, 3 आवासीय स्मारक एवं 1 बौद्ध विहार प्रकाश में आए हैं। प्राप्त अवशेषों का अनुरक्षण एवं उत्खनन स्थल का संरक्षण कार्य किया जा रहा है। सिरपुर उत्खनन से प्राप्त प्रतिमाओं तथा पुरावशेषों के प्रदर्शन हेतु संग्रहालय निर्माण के लिए राशि रू. 15.00 लाख, कलेक्टर महासमुन्द को प्रदान की गई है। वर्ष 2006 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण रायपुर मंडल के अधीक्षण पुरातत्वविद् के निर्देशन में राज्य पुरातत्व विभाग के सहयोग से उत्खनन के लिए अनुमति केन्द्र सरकार द्वारा प्रदान की गई है।

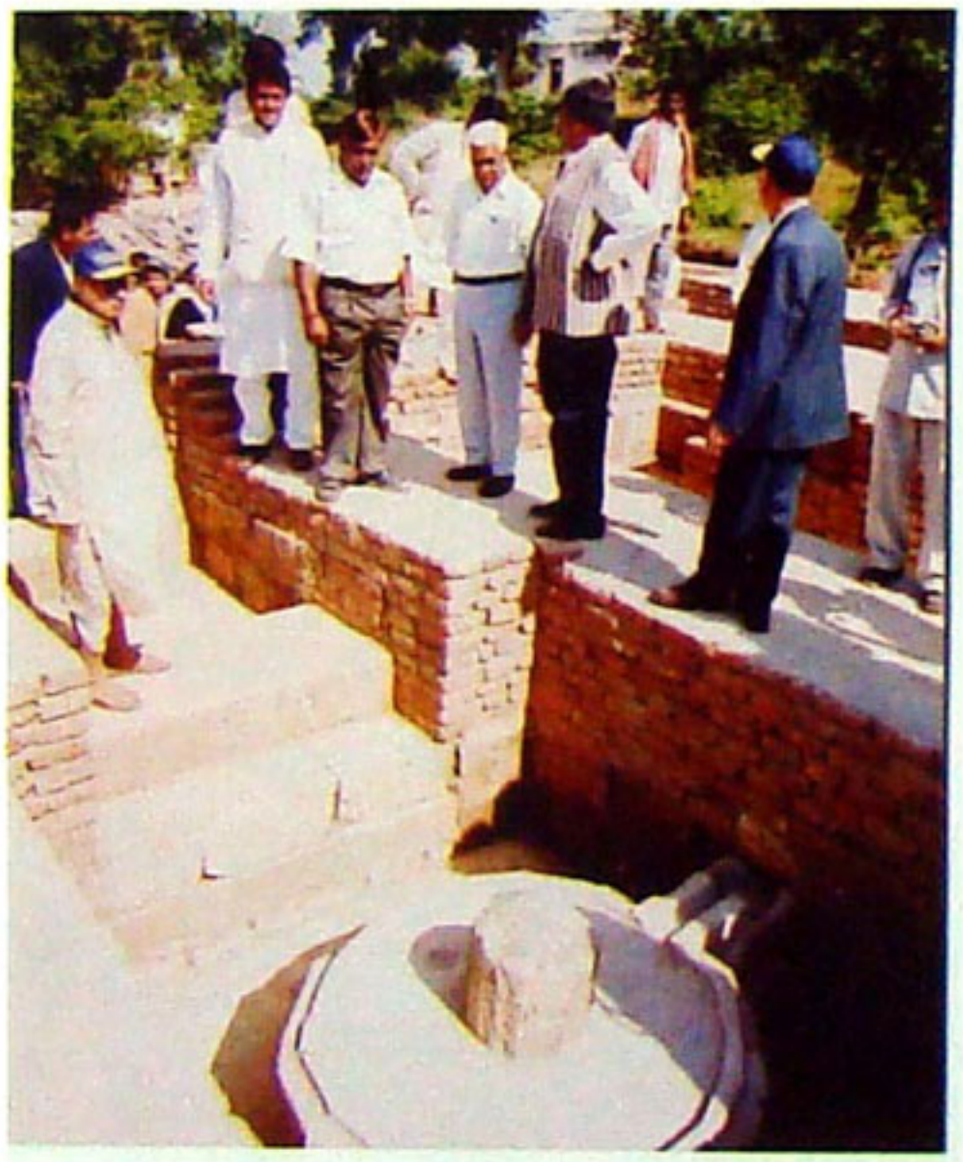

- अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों एवं सचिवों द्वारा सिरपुर में नव उत्खनित स्थलों का निरीक्षण किया गया।

संग्रहालय

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर के विभिन्न दीर्घाओं में जीव-जन्तु दीर्घा, आदिवासी दीर्घा, पुरातत्वीय दीर्घा, पारंपरिक शिल्प दीर्घा की प्रदर्शन व्यवस्था का आधुनिकीकरण किया गया है। परिसर को आकर्षक बनाने के उद्देश्य से उद्यान का सौन्दर्यीकरण तथा परिसर में विभिन्न शिल्प/ मॉडल तैयार किए गए हैं।

- पुरातत्वीय सम्पदा के प्रति जन जागृति लाने तथा जनसामान्य की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला पुरातत्व संघों का जिला स्तर पर गठन की कार्यवाही की गई है। ग्राम स्तर पर ग्राम धरोहर समिति का गठन की कार्यवाही की जा रही है। पंचायतों के माध्यम से भी इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य में फैली पुरातत्वीय सम्पदा की सुरक्षा के लिए राज्य शासन द्वारा 68 चौकीदार/ केयर टेकर के पदों की स्वीकृति प्राप्त हुई है, जिससे इनकी सुरक्षा के बेहतर प्रबंध किए जाएंगे।

- छत्तीसगढ़ राज्य की वैभवशाली पुरासम्पदा के संरक्षण, प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण जिलों में पुरातत्वीय संग्रहालय स्थापित करने के लिए राजनांदगांव, जांजगीर-चांपा, महासमुन्द, कांकेर, सरगुजा, रायगढ़, कोरिया, बिलासपुर कलेक्टरों सहित खैरागढ़ विश्वविद्यालय को संग्रहालय के विकास के लिए राशि आवंटित की गई है। जगदलपुर में राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व पर आधारित एक अनूठा संग्रहालय बनाने की योजना पर भी कार्य किया जा रहा है।

- रायपुर सहित राज्य के सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य प्रमुख नगरो अंबिकापुर, जगदलपुर एवं बिलासपुर में पुरातत्वीय संग्रहालय के विकास के साथ-साथ इनको सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है। इन केन्द्रों में आंचलिक साहित्य पुस्तकालय, क्षेत्र की लोक कला के अभिलेखन एवं उससे संबंधित म्यूजिक लाईब्रेरी, लोक शैली व लोक परंपराओं पर आधारित संग्रहालय बनाया जाएगा। साथ ही इन केन्द्रों के माध्यम से वर्ष भर सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाएगी।

संगीत संग्रहालय की स्थापना - महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में संगीत संग्रहालय की स्थापना की गई एवं इसके लिए आडियो-कैसेट, सीडी, वीडियो कैसेट, एल.पी. रिकार्ड्स का संग्रहण किया गया।

महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय

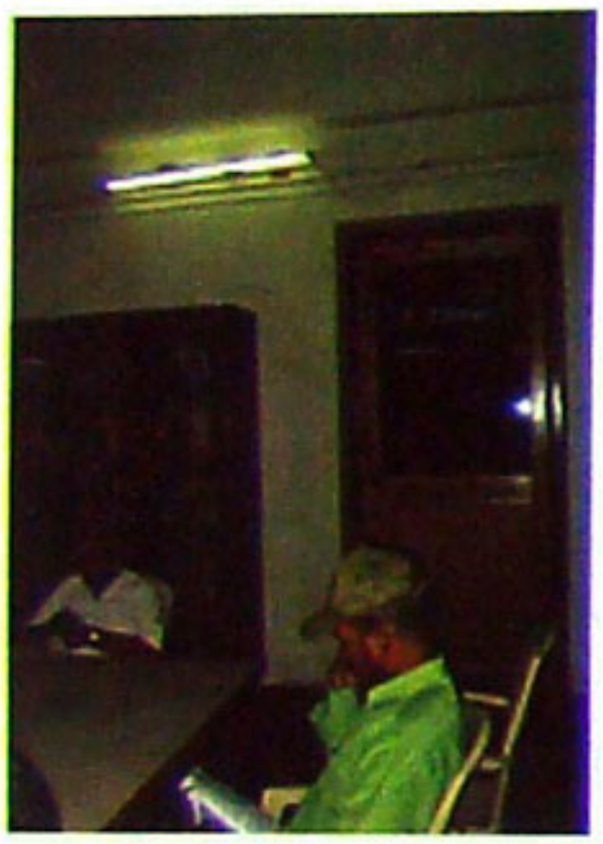

संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय को राज्य केन्द्रीय ग्रंथालय का दर्जा दिया गया है। साथ ही इसे ई-लाईब्रेरी के रूप में विकसित किया जा रहा है। 11वें वित्त आयोग के अंतर्गत प्राप्त राशि से इस ग्रंथालय के विकास हेतु रू. 50.00 लाख की कारपस निधी बनाई गयी है। इस पुस्तकालय को शहीद स्मारक में स्थानांतरित करने की योजना भी तैयार की गई है, जिससे कि अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें। पुस्तकालय में छत्तीसगढ़ राज्य से संबंधित जानकारी के लिए अलग कक्ष का निर्माण किया जाएगा।

पुरखौती मुक्तांगन

राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व, पर्यावरण और जीव-सृष्टि की सन्निधि में विकास की कल्पना को साकार करने हेतु रायपुर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर 'पुरखौती मुक्तांगन' राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के माध्यम से आकार ले रहा है। कोण्डागांव के लौह शिल्पी, नारायणपुर, बस्तर के काष्ट शिल्पी, एकताल, रायगढ़ एवं कोंडागांव के पीतल शिल्पी, सरगुजा के रजवार कलाकारों आदि के सतत् प्रयत्नों से पुरखौती मुक्तांगन तैयार किया जा रहा है। इस योजना में ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग, अभनपुर एवं वन विभाग के माध्यम से भी कार्य किए जा रहे हैं। योजना को विस्तृत रूप देने की दृष्टि से राज्य के कला मर्मज्ञों से इसके विभिन्न प्रस्ताव एवं प्लान भी प्राप्त हुए हैं। इसमें उत्कृष्ट प्रविष्टियों के लिए प्रथम पुरस्कार रू. 1,00,000/-, द्वितीय पुरस्कार रू. 50,000/- तथा तृतीय पुरस्कार रू. 25,000/- रखे गए हैं।

माडलिंग -

- विभागीय गतिविधियों के अंतर्गत राज्य के महत्वपूर्ण प्राचीन कलात्मक प्रतिमाओं की प्रतिकृति तैयार कर सामान्य मूल्य में जनता को उपलब्ध कराने तथा प्रचार-प्रसार की दृष्टि से सिरपुर से प्राप्त मंजुश्री की प्रतिमा, शिव मंदिर घटियारी की अशोक वाटिका में सीता की प्रतिमा का प्लास्टर कास्ट प्रतिमाओं का निर्माण किया जा रहा है।

- विभाग में उपलब्ध प्लास्टर कास्ट प्रतिमाओं तथा प्रकाशनों के विक्रय हेतु संग्रहालय परिसर में विक्रय केन्द्र का निर्माण किया गया है।

छत्तीसगढ़ बहुआयामी संस्कृति संस्थान

बहुआयामी संस्कृति संस्थान, राज्य के समस्त प्रकार के सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार-प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान होगा. इसे साकार करने के उद्देश्य से आडिटोरियम, मुक्ताकाश मंच, आर्ट गैलरी आदि तैयार करने की योजना बनाई गई है। 'बहुआयामी संस्कृति संस्थान' के भवन के निर्माण हेतु रायपुर में 4.8 एकड़ भूमि पंडरी, पुराने बस स्टैण्ड में प्राप्त की जा चुकी है। बहुआयामी संस्कृति संस्थान के निर्माण हेतु केन्द्र शासन द्वारा भी रू. 4.00 करोड़ उपलब्ध कराने की सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त हुई है। जिसमें से राज्य शासन के समान अंशदान के अनुरूप केन्द्र शासन का अंशदान रू. 25.00 लाख प्राप्त हो चुकी है। राज्य शासन तथा केन्द्र शासन का अंश कुल रू. 50.00 लाख इस वर्ष बैंक में जमा कर दिया गया है। बहुआयामी संस्कृति संस्थान के निर्माण हेतु विज्ञापन के माध्यम से देश के प्रमुख वास्तुविदों से प्रस्ताव मंगाये गए हैं ।

- **श्री राजीवलोचन कुंभ 2006 का आयोजन** - राज्य की धरोहर, कला, संस्कृति एवं परंपराओं के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से श्री राजीवलोचन कुंभ 2006 का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य आयोजन 18 फरवरी से 26 फरवरी 2006 तक राजिम में सम्पन्न किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के कोने-कोने से साधु-संतों का समागम राजिम में आयोजित है एवं संतों की सहमति से इसे कुंभ समान आयोजन का स्थान प्राप्त हुआ है। इस प्रकार के आयोजन से छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहे जाने वाले 'राजिम' के साथ-साथ राज्य की धरोहर, संस्कृति, परंपरा एवं कला के प्रचार-प्रसार को एक नया आयाम तो मिलेगा ही, साथ ही पर्यटन की दृष्टि से भी शासन का यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

इस वर्ष मुख्य मंच, राजिम में छत्तीसगढ़ महिमा एवं श्री राजीवलोचन वंदना पर आधारित लोक नृत्य एवं गीत, राज्य के प्रमुख पंडवानी, पंथी, चंदैनी, नाचा आदि के ख्याति प्राप्त लोक कलाकारों की रंगारंग प्रस्तुति एवं ध्वनि व प्रकाश पर आधारित प्रस्तुति के साथ-साथ पंचक्रोशी क्षेत्रों में आयोजन के क्रम में महाप्रभु वल्लभाचार्य की जन्म स्थली चम्पारण्य में 'चिन्हारी' योजना के अंतर्गत पंडवानी, भरथरी पंथी, व अन्य लोक नृत्यों की प्रतियोगिताएं एवं राज्य के प्रतिष्ठित लोक मंचों की प्रस्तुतियां एवं छत्तीसगढ़ी कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। नवापारा में छत्तीसगढ़ के लोक करतबों की द्वि-दिवसीय रोमांचक प्रस्तुतियों के साथ ही लोमश ऋषि आश्रम में वृंदावन की प्रसिद्ध रासलीला

की भक्तिमय एवं संगीतमय प्रस्तुति एवं प्रवचन का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही इस अवसर पर कुंभ तट पर विभागीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है।

- प्रदेश के हिन्दी एवं अन्य आंचलिक भाषाओं के कवियों को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से माह फरवरी में विशाल काव्य कुंभ का आयोजन किया गया। जिसमें राज्य के 70 से भी अधिक कवि रायपुर, चम्पारण्य एवं नवापारा में अपना काव्य-पाठ किये।
- रायपुर में आयोजित 'जगार' में राज्य के लोक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति की गई।
- लोक शिल्पियों की राष्ट्रीय कार्यशाला 'शिल्प मड़ई' का आयोजन किया जा रहा है।
- भारत की अभिलेखन परम्परा एवं इतिहास लेखन में अभिलेखीय साक्ष्यों का महत्व विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।
- छत्तीसगढ़ का स्थापत्य एवं पुरावैभव विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।
- छत्तीसगढ़ की कला, परंपरा, भाषाओं पर 'छत्तीसगढ़ी अभिव्यक्ति' पर आधारित जिला स्तरीय एवं राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा।
- शिल्पियों की अखिल भारतीय कार्यशाला का आयोजन रायपुर में करने की योजना है, जिसमें छत्तीसगढ़ के शिल्पियों के अतिरिक्त अन्य राज्यों के शिल्पी भी शिरकत करेंगे व इस प्रकार शिल्प कला का अदान-प्रदान तो होगा ही, साथ ही अन्य राज्यों के साथ छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक संबंध भी सुस्पष्ट होंगे।

संस्कृति एवं पुरातत्व

(संस्कृति, पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय बजट प्रावधान की जानकारी)

वित्तीय वर्ष 2005-06

क्र.	योजना का नाम	आयोजनेत्तर	आयोजना	योग
1	2	3	4	5
लेखा शीर्ष - 2205			(आंकड़े लाख रूपयों में)	
1	103 - पुरातत्व + द्वितीय अनुपूरक	133.38	43.25	176.63
2	104 - अभिलेखागार	11.80	-	11.80
3	105 - सार्वजनिक पुस्तकालय	-	15.00	15.00
4	107 - संग्रहालय	119.13	-	119.13
	योग	**264.31**	**58.25**	**322.56**
लेखा शीर्ष - 2202 -2205-3454			(आंकड़े लाख रूपयों में)	
1	2202 आधुनिक भारतीय भाषा (102) और साहित्य का संवर्धन	22.16	-	22.16
2	2205 कला और संस्कृति 101 ललित कलाओं की शिक्षा	2.25	100.00	102.25
3	102 कला और संस्कृति का संवर्धन	79.00	-	79.00
4	(800) अन्य व्यय	1.00	87.50	88.50
5	3454 जनगणना सर्वे एवं सांख्यिकी (110) गजेटियर	-	8.44	8.44
	योग	**104.41**	**195.94**	**300.35**

मांग संख्या 41-आदिवासी उप योजना, 2205 - कला एवं संस्कृति

1	107 संग्रहालय	-	100.00	100.00

- वित्तीय वर्ष 2005-06 में द्वितीय अनुपूरक से प्राप्त रू. 66.79 लाख की जानकारी-

	लेखा शीर्ष - 2205		(आंकड़े लाख रूपयों में)	
1	103 - पुरातत्व	11.79	15.00	26.79
2	800 - अन्य व्यय	-	10.00	10.00
3	102 - कला और संस्कृति का संवर्धन	30.00	-	30.00
	योग	**41.79**	**25.00**	**66.79**

संस्कृति एवं पुरातत्व

वर्तमान में संचालनालय में कार्यरत अमले का विवरण

क्रमांक	कार्यालय का नाम	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	चतुर्थ श्रेणी	योग
1	पुरातत्व, अभिलेखागार, संग्रहालय, राजभाषा एवं संस्कृति	08	03	57	42	110
	योग	**08**	**03**	**57**	**42**	**110**

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व की अनुमोदित पद संरचना

क्र.	पद नाम	वेतनमान	शासन द्वारा स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद
1	2	3	4	5	6
1	आयुक्त/संचालक - प्रथम श्रेणी	अखिल भारतीय सेवा	1	1	
2	संयुक्त संचालक-प्रथम श्रेणी	12000-16500	2	1	1
3	उपसंचालक-प्रथम श्रेणी	10000-15200	6	6	-
4	सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी	8000-13500	1	-	1
5	सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी	6500-10500	1	1	-
6	प्रकाशन अधिकारी	8000-13500	1	-	1
7	मुद्राशास्त्री	8000-13500	1	-	1
8	पुरातत्ववेत्ता	8000-13500	2	1	1
9	ग्रंथपाल	8000-13500	1	1	-
10	सहायक यंत्री	8000-13500	1	-	1
11	मुख्य रसायनज्ञ	8000-13500	1	-	1
12	पुरातत्वीय अधिकारी	8000-13500	1	-	1
13	पुरालेख अधिकारी	8000-13500	1	-	1
14	पुरालेखवेत्ता	8000-13500	1	-	1
15	संग्रहाध्यक्ष	8000-13500	3	-	3
16	लेखाधिकारी	8000-13500	1	1	-
17	संरक्षण अधिकारी	6500-10500	1	-	1
18	सहा.पुरालेख अधि.तृतीय श्रेणी	5500-9000	1	1	-
19	अधीक्षक	5500-9000	1	1	-
20	अनुदेशक	5500-9000	2	2	-
21	कनिष्ठ लेखाधिकारी	5000-8000	1	-	1
22	सहायक अधीक्षक	5000-8000	1	1	-
23	सहायक ग्रंथपाल	5000-8000	2	2	-

1	2	3	4	5	6
24	सहायक प्रोग्रामर	5000-8000	1	-	1
25	उपयंत्री	5000-8000	3	2	1
26	मान चित्रकार	5000-8000	2	1	1
27	कलाकार	5000-8000	2	1	1
28	रसायनज्ञ	5000-8000	2	2	-
29	शोध सहायक	5000-8000	2	1	1
30	सहायक वर्ग - 1	4500-7000	1	-	1
31	तकनीकी सहायक	4500-7000	2	2	-
32	सहायक पुरालेखपाल	4500-7000	1	-	1
33	सहायक कलाकार	4500-7000	2	2	-
34	सहायक रसायनज्ञ	4500-7000	2	2	-
35	उत्खनन सहायक	4500-7000	3	-	3
36	अनुवादक	4500-7000	2	1	1
37	सहायक वर्ग - 2	4000-6000	12	10	2
38	स्टेनो ग्राफर	4000-6000	3	-	3
39	विडीयोग्राफर/ छायाचित्रकार	4000-6000	1	1	-
40	पर्यवेक्षक	4000-6000	1	-	1
41	सर्वेयर	4000-6000	3	2	1
42	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	3500-5200	8	5	3
43	मार्ग दर्शक/ गाईड	3500-5200	3	3	-
44	स्टेनों टायपिस्ट	3050-4590	5	5	-
45	सहायक ग्रेड-3	3050-4590	17	7	10
46	वाहन चालक	3050-4590	3	1	2
47	मोल्डर/ सेल्समेन	3050-4590	2	1	1
48	वाईन्डर	3050-4590	1	-	1
49	भृत्य	2550-3200	25	25	-
50	चौकीदार	2550-3200	3	3	-
51	चौकीदार	जिलाध्यक्ष दर	1	1	-
52	फर्राश (अंशकालीन)	जिलाध्यक्ष दर	1	1	-
53	केयर टेकर	जिलाध्यक्ष दर	12	12	-
	योग		**160**	**110**	**50**

- वित्त विभाग द्वारा 68 चौकीदार/केयर टेकर के पदों की स्वीकृति मिली है।

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन